समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०२४ • वर्ष : २८ • अंक : ०४ (निरंतर अंक : ३२८) • भाषा : हिन्दी

• पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस

१० नवम्बर

श्रीमद्भगवद्गीता जयंती

११ दिसम्बर

गीता में कर्म को कर्मयोग में बदलने का सामर्थ्य है । भगवान गीता (१८.४६) में कहते हैं :

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।

उस परमेश्वर की अपने कर्मों से पूजा करके मनुष्य सिद्धि (स्वतः अपने आत्मस्वरूप में स्थिति) प्राप्त करता है । - पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

ऐसे संत को जेल में रखना सही नहीं है ।

- साध्वी निर्मलानंद योग भारतीजी, अध्यक्षा, पातंजल योग मठ १३

शरीर लाचार हो जाय उसके पहले परमात्मा के अनुभव में जाग जाओ

(पूज्य संत श्री
आशारामजी बापू के सत्संग से)

विश्व की जो भी शक्ति है वह उस परमात्मा की है। ऐसा कोई बुद्धिमान नहीं, ऐसा कोई बलवान नहीं जो अलग से बुद्धि, बल लाता हो। जो भी बल है, सामर्थ्य है, बुद्धि है, योग्यता है उसका उद्गम-स्थान, पोषक-स्थान आत्मा-परमात्मा है। शास्त्रों में आता है कि जब तक शरीर में बल है, इन्द्रियों में कुछ क्षमता है, बुद्धि में समझने की योग्यता है और बुढ़ापे ने गला नहीं दबाया है तब तक के समय में अपना परमात्म-प्रकाश कर लेना चाहिए।

परमात्म-प्रकाश कहने से ऐसा नहीं समझना कि केवल रोशनी को प्रकाश बोलते हैं; नहीं, आनंद-आनंद आये, सुख-दुःख में समता आये यह परमात्म-प्रकाश है। जगत सपने की नाईं लगे और उसको निहारनेवाला साक्षी चैतन्य नित्य है, ऐसा लगे यह परमात्म-प्रकाश है। राग और द्वेष का अधिक प्रभाव न पड़े तो समझो कि यह परमात्म-प्रकाश है। **परमात्मा प्रकाशते।**

जैसे दरिया की ओर जाते हैं तो वहाँ पहुँचने के पहले ही दरियाई हवाओं से हवामान बदलने से हम समझ जाते हैं कि दरिया पास है, ऐसे ही परमात्मा का अनुभव होने के पहले ही परमात्मा का स्वभाव अपने हृदय में प्रकट होने लगता है अर्थात् निर्भयता आने लगती है, ज्ञानयोग में स्थिति होने लगती है, इन्द्रियों का संयम होने लगता है, स्वभाव में सरलता आने लगती है। भगवान के २६ दैवी गुणों का प्राकट्य होने लगता है। सामवेद की संन्यास उपनिषद् में लिखा है :

यस्तु द्वादशसाहस्रं प्रणवं जपतेऽन्वहम्। तस्य द्वादशभिर्मासैः परं ब्रह्म प्रकाशते॥

'जो मनुष्य प्रणव (ॐ) का प्रतिदिन १२,००० जप करता है उसे १२ माह में ही परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है।' (अध्याय २, मंत्र १२३)

अगर कोई ईमानदारी से लग जाय तो एक वर्ष के अनुष्ठान में परमात्म-प्रकाश हो जाता है। प्रतिदिन ॐकार का १२,००० बार जप करे व नीच कर्मों का त्याग कर दे तथा ईश्वरप्राप्ति का उद्देश्य बना ले तो एक वर्ष के अंदर ईश्वरप्राप्ति ! एक साल में स्नातक पद नहीं मिलता, एक साल में कोई ऊँचे पद को नहीं पाता लेकिन सारे ऊँचे पद नन्हे हो जायें ऐसे परमात्मा को पा सकता है।

गुरु को, भगवान को एकटक देखें और ॐकार का गुंजन करें। थोड़े ही दिनों में गुरुमूर्ति से, भगवन्मूर्ति से प्रकाश, आनंद और प्रेरणा आयेगी तथा बुद्धि ऐसी बढ़िया और शुद्ध होगी कि महाराज ! बुद्धिदाता भगवान अपने आत्मा हैं इस प्रकार का प्रकाश (ज्ञान-अनुभव) प्राप्त हो जायेगा।

शरीर लाचार हो जाय, बीमारी हो जाय, रुग्ण अवस्था आ जाय, पराधीनता आ जाय उसके पहले स्वाधीन हो जाओ। 'स्व' के, परमात्मा के अनुभव में जाग जाओ।

श्रीमद्भगवद्गीता

की इतनी महिमा क्यों है ?

११ दिसम्बर को श्रीमद्भगवद्गीता जयंती है। इस दिन संत श्री आशारामजी आश्रमों तथा गुरुकुलों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। गीताजी का पूजन, आरती तथा श्लोकों का पठन, गायन आदि किया जायेगा। पूज्य बापूजी के सत्संग के 'गीता प्रसाद' आदि सत्साहित्य का वितरण किया जायेगा। अनेक विद्यालयों में गीता-ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा।

अपना सर्वांगीण विकास चाहनेवालों को रोज गीता के श्लोकों का पठन-मनन करना चाहिए। कारण कि यह मानवमात्र के कल्याण का खजाना अपने में समाये हुए है। इसकी महिमा पर प्रकाश डालते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं :

एक समय की बात है। भगवान नारायण शेषशय्या पर आराम कर रहे थे। लक्ष्मीजी ने पूछा : ''जो लोग सोये रहते हैं उनको आलसी कहते हैं। जो आलसी होते हैं उनका धन, यश, प्रभाव क्षीण हो जाता है परंतु आप जब देखो तब आराम करते रहते हैं फिर भी आपके चरणों की सेवा करनेमात्र से मैं लक्ष्मी माता हो के पूजी जा रही हूँ और आपका संकल्प सृष्टि का पालन करने का सामर्थ्य रखता है तो आपके पास ऐसी कौन-सी शक्ति है कि आप लेटे रहते हैं फिर भी आलसियों से बिल्कुल अलग

यूनिसेफ ने उजागर किये

मातृभाषा में शिक्षा के लाभ

यूनिसेफ ने यह भी कहा कि 'भारत में २२ से अधिक आधिकारिक भाषाएँ तथा अनगिनत बोलियाँ हैं जो देश के भाषाई परिदृश्य को समृद्ध एवं विविधतापूर्ण बनाती हैं। मातृभाषा में शिक्षा के माध्यम से इस विविधता को अपनाना देश की प्रत्येक भाषा का, सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान करना है।'

मातृभाषा केवल संवाद का एक साधन नहीं बल्कि व्यक्ति की सांस्कृतिक और भावनात्मक पहचान का मूल आधार होती है । हाल ही में मातृभाषा में शिक्षा के महत्त्व को बताते हुए संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (णछ्खउएऋ) ने कहा कि 'मातृभाषा में शिक्षा आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पहचान की भावना को प्रबल बनाती है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में विश्वास के साथ खुद को अभिव्यक्त करते हैं तो उनमें आत्मविश्वास झलकता है और वे अपनी विरासत से गहरा संबंध महसूस करते हैं । यह आंतरिक प्रेरणा उनके सीखने की इच्छा को बढ़ाती है, जिससे वे अपनी शैक्षणिक यात्रा में उन्नत होते जाते हैं । उनकी संकल्पनाएँ स्पष्ट हो जाती हैं, विचार स्वतंत्र रूप

भगवन्नाम के सौदागर

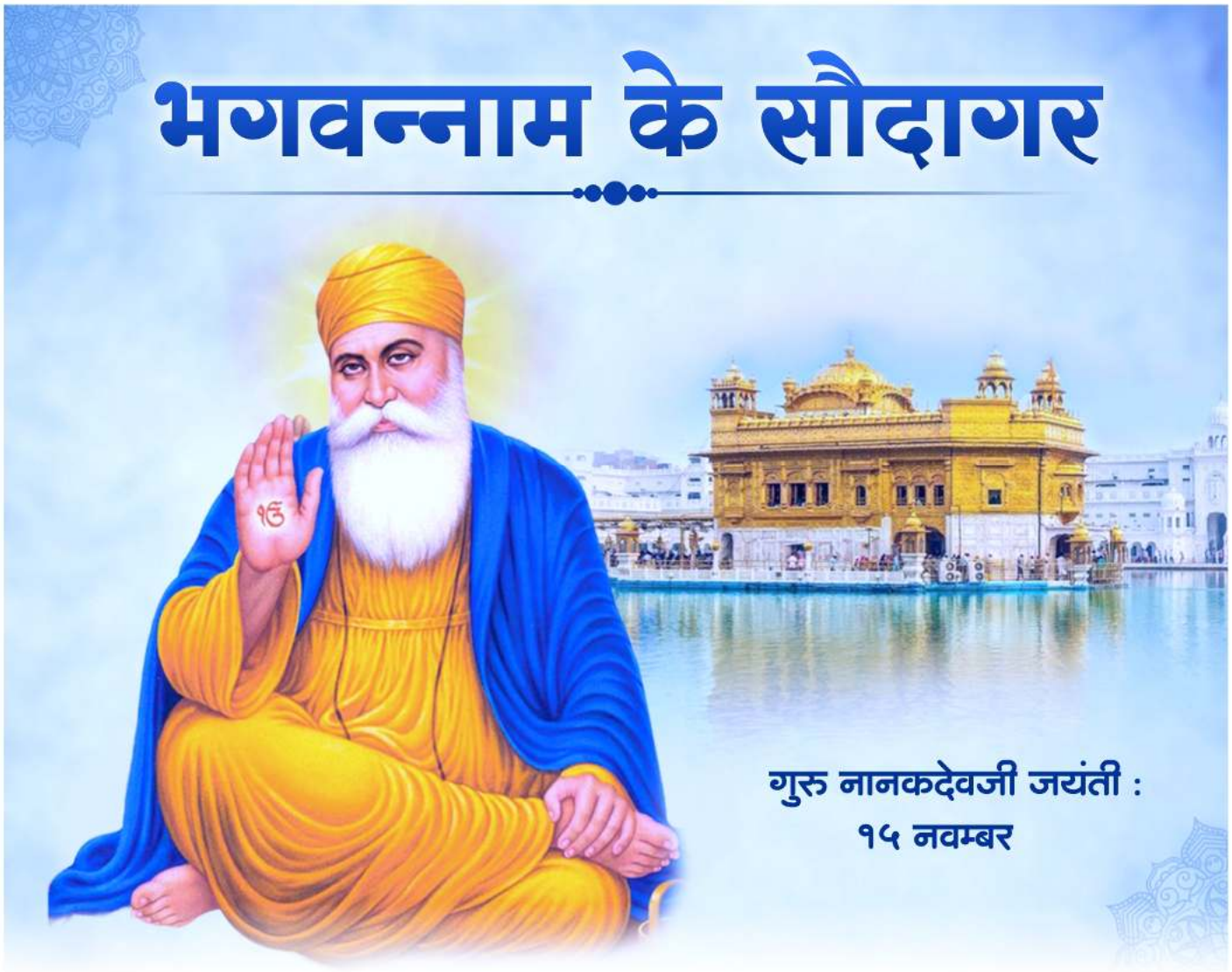

गुरु नानकदेवजी जयंती :
१५ नवम्बर

आपके जीवन में एक तो भगवन्नाम (गुरुमंत्र) आ जाय और दूसरा, संतों का संग बार-बार मिले। ये २ चीजें मिलेंगी तो आधिभौतिक जगत आपको तपायेगा नहीं, दुःख देगा नहीं, आपके जीवन में समता बनी रहेगी। सुखस्वरूप परमात्मा की स्मृति, ज्ञान आपके जीवन को रसमय बना देंगे।

.....

१५ नवम्बर को गुरु नानकदेवजी की जयंती है। यह दिन उनकी शिक्षाओं को याद करके उनको अपने जीवन में लाने की प्रेरणा देता है। नानकजी के जीवन की एक घटना के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

एक व्यक्ति का नाम था सज्जन भैया परंतु वह ऐसा बदमाश था कि दुर्जनों को भी शरमा दे। कभी-कभी ऐसा होता है कि नाम होता है लक्ष्मीचंद और होते हैं कँगले, नाम होता है अमर सिंह और जल्दी मर जाते हैं, नाम होता है जगपाल और भीख माँगते हैं। वह सज्जन जिस किसी प्रभावशाली व्यक्ति को देखता उससे मीठी-मीठी बातें करके अपने घर ले आता, भोजन कराता। भोजन में ऐसी कोई विषैली चीज डाल देता था कि खानेवाले को पता ही न चले कि यह विष है। वह व्यक्ति मर जाता था। फिर उसका सामान वह हड़प लेता और रोने-धोने का नाटक करके अंत्येष्टि कर देता।

एक दिन नानकजी उसके इलाके से गुजर रहे थे। उसने सोचा कि 'नानकजी को बहुत लोग

देशभर के गुरुकुलों में सुसम्पन्न हुए

विद्यार्थी शिविर

देश की भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य निर्माण हेतु पूज्य बापूजी द्वारा समय-समय पर अनेक प्रकल्प चलाये गये हैं। संतश्री चाहते हैं कि विद्यार्थी लौकिक शिक्षा तो प्राप्त करें ही, साथ ही उनका शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक - बहुआयामी विकास हो तथा उनके जीवन में योगविद्या व आत्मविद्या भी आये। पूज्य बापूजी की प्रेरणा से संचालित गुरुकुलों की दैनंदिन गतिविधियाँ पूज्यश्री के इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होती हैं, साथ ही समय-समय पर विशेष आयोजन भी इनमें किये जाते हैं।

पिछले महीने में गुरुकुलों में विद्यार्थी शिविरों का आयोजन किया गया था। केन्द्रीय गुरुकुल प्रबंधन समिति के तत्त्वावधान में देशभर के गुरुकुलों में हुए इन चार दिवसीय विद्यार्थी शिविरों में ऋषिकुमारों ने अपने ऋषिवर सद्गुरुदेव पूज्य बापूजी एवं पूर्वकालीन सभी ऋषि-मुनियों द्वारा निर्दिष्ट आंतरिक अनुसंधान के महामार्ग का अवलम्बन करते हुए आंतरिक शक्तियों को विकसित करने की दिशा में यात्रा की।

इन शिविरों में विद्यार्थियों ने आत्मविद्या प्रदायक एवं जीवन को संतुलित-सुविकसित बनानेवाले सत्संग, ध्यान, प्राणायाम, जप, आसन, सूक्ष्म शक्तियों को जागृत करनेवाले यौगिक प्रयोग आदि के साथ श्री आशारामायणजी का पाठ आदि का भी लाभ लिया। कुछ बच्चों ने सारस्वत्य मंत्र का अनुष्ठान भी किया।

विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य, आदर्श दिनचर्या, विद्यार्थी के कर्तव्य, संस्कृति का महत्त्व, राष्ट्रभक्ति, परीक्षा में सफलता, स्वास्थ्य आदि विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया।

कुछ विद्यार्थियों के उद्गार :

भुयश साहू, छिंदवाड़ा गुरुकुल : हमारे गुरुकुल का यह सिद्धांत नहीं है कि हम विद्यार्थी केवल पुस्तकीय विद्या पढ़ें। यहाँ की शिक्षा में तो विद्यार्थी के

धर्मांतरण-विरोधी कानून में हुए संशोधन

अधिकतम सजा आजीवन कारावास, जुर्माना १० लाख

उत्तर प्रदेश में धर्मांतरण-विरोधी कानून में संशोधन किये गये हैं। संशोधित अधिनियम में अलग-अलग अपराधों को लेकर वर्णित सजा व जुर्माने का प्रावधान निम्नानुसार है –

(१) दिव्यांग या मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति, महिला अथवा अनुसूचित जाति/जनजाति के व्यक्ति का धर्मांतरण करना : ५ से लेकर १४ वर्ष तक की सजा, कम-से-कम १ लाख का जुर्माना।

(२) सामूहिक धर्म-परिवर्तन करना : ७ वर्ष से लेकर १४ वर्ष की सजा, कम-से-कम १ लाख का जुर्माना।

(३) धर्म-परिवर्तन के संबंध में किसी विदेशी अथवा अवैध संस्था से धन प्राप्त करना : ७ वर्ष से लेकर १४ वर्ष की सजा, कम-से-कम १० लाख का जुर्माना।

(४) धर्म-परिवर्तन करने के उद्देश्य से किसी व्यक्ति को उसके जीवन या सम्पत्ति के लिए भय में डालना, उस पर हमला करना या बल का प्रयोग करना अथवा उसको विवाह का वचन देना : २० वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा, पीड़ित को मुआवजे के रूप में जुर्मानेसहित देने होंगे अधिकतम ५ लाख रुपये।

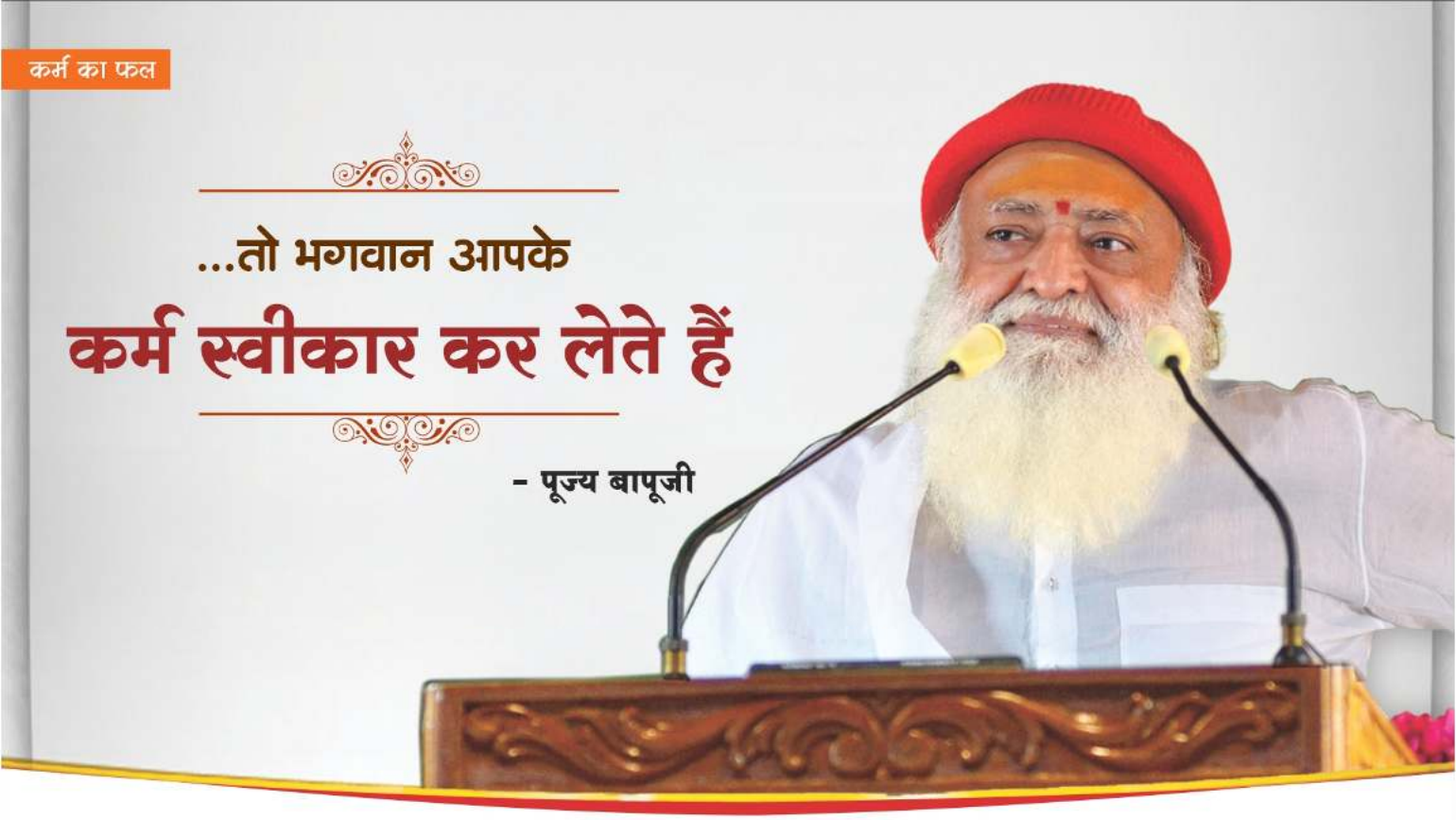

...तो भगवान आपके

कर्म स्वीकार कर लेते हैं

– पूज्य बापूजी

स्वामी रामतीर्थ बोलते थे कि मूर्ख लोग कर्म के फल की इंतजारी में मर जाते हैं लेकिन उनको पता नहीं कि कर्म करते समय जो आनंदरूपी फल प्रकट होता है वह कर्म करने के बाद मिलनेवाले फल से भी ऊँचा है और मिलनेवाले फल तो तुम्हारे पीछे-पीछे घूमेंगे । जब पापकर्म का फल हम नहीं चाहते हैं तब भी सजा तो मिलती है तो पुण्य का फल तुम न चाहो तब भी मजा मिलता, मिलता और मिलता है। फिर नाहक क्यों अपनी बेइज्जती करना !

कर्म में जब फल की लोलुपता मिला देता है व्यक्ति तो कर्म करने की जो योग्यता है, उत्साह है, आनंद है, क्षमता है वह कुंठित हो जाती है। कर्म में फल की आसक्ति होती है तो फल की चिंता भी होती है और फल मिलेगा, कैसा मिलेगा, कब मिलेगा – यह विह्वलता होती है इसलिए कर्म इतना सुसज्ज नहीं होता है । और कर्म में जब फल की आसक्ति हट जाती है तो कर्म करने का अपना रस आता है, आनंद आता है।

स्वामी रामतीर्थ बोलते थे कि मूर्ख लोग कर्म के फल की इंतजारी में मर जाते हैं लेकिन उनको पता नहीं कि **कर्म करते समय जो आनंदरूपी फल प्रकट होता है वह कर्म करने के बाद मिलनेवाले फल से भी ऊँचा है और मिलनेवाले फल तो तुम्हारे पीछे-पीछे घूमेंगे ।** जब पापकर्म का फल हम नहीं चाहते हैं तब भी सजा तो मिलती है तो पुण्य का फल तुम न चाहो तब भी मजा मिलता, मिलता और मिलता है। फिर नाहक क्यों अपनी बेइज्जती करना !

स्मार्त कर्म से भी भगवदीय कर्म बहुत-बहुत ज्यादा हितकारी हैं, कैसे ?

एक राजा मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ रहा है।

मालिन ने कहा : ''अन्नदाता ! हार... ।''

राजा ने हार ले लिया। ४ सीढ़ियाँ चढ़ा, दूसरी मालिन ने कहा : ''अन्नदाता ! हार चढ़ाओ।''

राजा ने उससे भी हार ले लिया। दोनों हारों को भगवान के चरणों में धरकर राजा ने एकटक प्रभु को देखा, प्रणाम किया । लौटते समय मंत्री को कहा : ''इन्हें हार के पैसे दे दो।''

पहली मालिन ने सोचा कि 'हार तो है ४ आने का लेकिन ५ रुपये माँग लूँ, दे देंगे।'

समग्र योगयात्रा भाग-१

इसमें आप पायेंगे : ✲ पूज्य बापूजी की कृपाशक्ति से साधकों को हुई विलक्षण अनुभूतियों का संकलन ✲ बापूजी के योगबल का ऐसा चमत्कार कि नास्तिक भी हो गये नतमस्तक ! ✲ क्यों वैज्ञानिकों के लिए आश्चर्य बनी पूज्य बापूजी की आभा ?

प्राकृतिक सुगंधयुक्त, हानिरहित धूपबत्तियाँ

गौ-चंदन धूपबत्ती, स्पेशल गौ-चंदन धूपबत्ती, साधना चंदन धूप, साधना मोगरा धूप, साधना गूगल धूप

✲ देशी गाय के गोबर और सुगंधित जड़ी बूटियों के मिश्रण से निर्मित ये धूपबत्तियाँ वातावरण के हानिकारक कीटाणुओं को नष्ट करके आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करती हैं । ✲ तन को शुद्ध, मन को पवित्र और बुद्धि को विकसित करने में सहायक हैं । ✲ बुद्धिलाभ, स्वास्थ्य लाभ, गौ-सेवा लाभ के साथ-साथ भक्तिलाभ देती हैं । ✲ स्पेशल गौ-चंदन धूपबत्ती गोबर, गूगल, पलाश, बिल्व-पत्र, मिश्री एवं अन्य दुर्लभ जड़ी-बूटियों से निर्मित है ।

१००% शुद्ध व ऑर्गेनिक भीमसेनी कपूर

✲ औषधीय प्रयोग हेतु यह सर्वोत्तम कपूर है । ✲ नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने और वातावरण को शुद्ध करने के लिए भीमसेनी कपूर का उपयोग श्रेष्ठ बताया गया है ।

गाय के अमृततुल्य पीयूष (खीस) से निर्मित पीयूष का घी

✲ रोगप्रतिरोधक क्षमता से भरपूर ✲ पुष्टिकारक तथा ओज-तेज, वीर्य व बुद्धिशक्ति की वृद्धि में लाभकारी ✲ चिरयौवन व दीर्घायु प्रदायक ✲ मानसिक व तंत्रिका-तंत्र (nervous system) के रोगों में हितकारी ✲ दुर्बलता मिटाने में अत्यधिक सहायक

श्रेष्ठ बल्य रसायन अश्वगंधा चूर्ण व टेबलेट

ये सप्तधातु, विशेषकर मांस व वीर्य वर्धक एवं बल व पुष्टि वर्धक श्रेष्ठ रसायन हैं । ये स्नायुओं व मांसपेशियों को ताकत देते हैं, वात-शमन व कदवृद्धि करते हैं । धातु की कमजोरी, शारीरिक दुर्बलता आदि के लिए ये रामबाण औषधि हैं ।

दिव्य स्वर्णक्षार युक्त पीयूष बल्य रसायन

यह गौ-पीयूष से प्राप्त ओज-तेजवर्धक स्वर्णक्षार व अन्य अत्यंत गुणकारी पोषक तत्त्वों से युक्त होने से शक्ति, पुष्टि का दिव्य स्रोत है ।

देशी गाय के घी, आँवला व अनेक जड़ी-बूटियों से निर्मित

च्यवनप्राश / स्पेशल च्यवनप्राश

केसर, मकरध्वज व चाँदी युक्त

✲ स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक ✲ रोगप्रतिकारक शक्ति, नेत्रज्योति व स्फूर्ति वर्धक ✲ हृदय व मस्तिष्क पोषक ✲ फेफड़ों के लिए बलप्रद ✲ ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक ✲ हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत ✲ क्षयरोग में तथा शुक्रधातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी ✲ वात-पित्तजन्य विकारों में तथा दुर्बलता में विशेष हितकर

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

बाल-हृदयों में सुसंस्कारों का बीजारोपण करते 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम'

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

पुणे

कैथल (हरि.)

गांधीनगर (गुज.)

शमशाबाद-हैदराबाद

क्योंझर (ओड़िशा)

बीरगंज (नेपाल)

सेरिलिंगमपल्ली-हैदराबाद

रायरंगपुर, जि. मयूरभंज (ओड़िशा)

गोंदिया (महा.)

पालड़ी-अहमदाबाद

धनोरा, जि. जलगाँव (महा.)

ठाणे (महा.)

पटियाला

पाटण (गुज.)

धानपुर, जि. दाहोद (गुज.)

सोनबर्डी, जि. जलगाँव (महा.)

जीवन-निर्माण करनेवाले सुवचनों व श्रीचित्रों से युक्त नोटबुकों का निःशुल्क वितरण

पंचेड़ (म.प्र.)

कंचाड, जि. पालघर (महा.)

लिमखेड़ा, जि. दाहोद (गुज.)

अकोट, जि. अकोला (महा.)

जन-जन तक लोक कल्याण सेतु पहुँचाने की सेवा करके गुरुप्रसाद पानेवाले पुण्यात्मा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु | ऋषि प्रसाद | ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक और मुद्रक : राकेशसिंह आर. चंदेल प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी